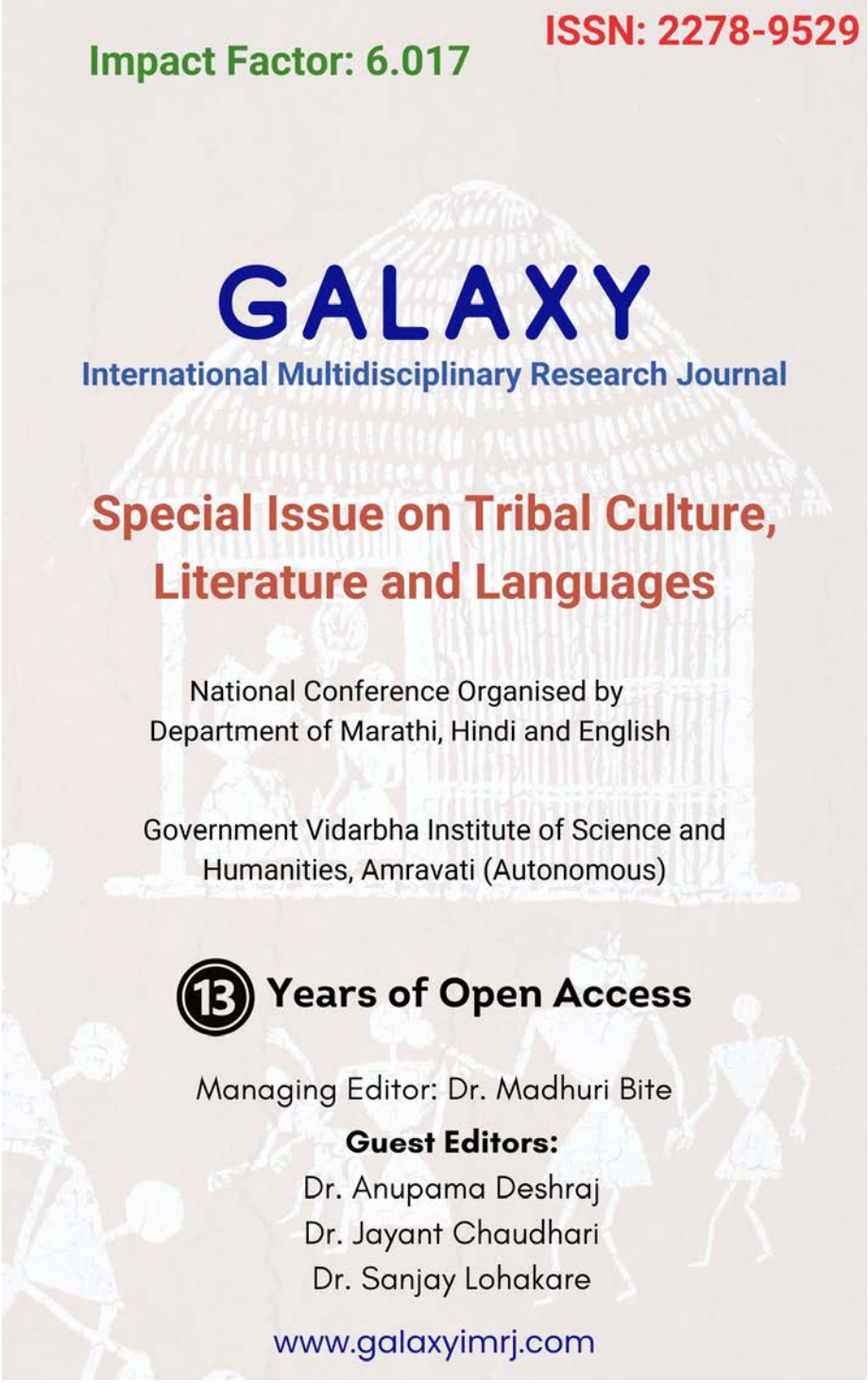

About Us: http://www.galaxyimrj.com/about-us/
Archive: http://www.galaxyimrj.com/archive/
Contact Us: http://www.galaxyimrj.com/contact-us/
Editorial Board: http://www.galaxyimrj.com/editorial-board/
Submission: http://www.galaxyimrj.com/submission/
FAQ: http://www.galaxyimrj.com/faq/

NATIONAL CONFERENCE ON

TRIBAL CULTURE, LITERATURE AND LANGUAGES

AUGUST २३ & २४, २०२४

Organized by

Department of Marathi, Hindi and English

Government Vidarbha Institute of Science and Humanities, Amravati, Maharashtra

(An Autonomous Institute of Government of Maharashtra)

Subject – आदिवासी साहित्य की अवधारणा

Research Paper

By

Dr. Nilam N. Matkar
(CHB - Hindi Department)

आदिवासी साहित्य की अवधारणा

-साहित्य॰ समाज का दर्पण है। साहित्य हि समाज कों नई दशा और नई दिशा देने का कार्य करता है। आदिवासी साहित्य का संबंध उस साहित्य से है, जिसमे आदिवासियों के जीवन तथा समाज दर्शन की अभिव्यक्ति हो । आदिवासी साहित्य कों अनेक नामों से जाना जाता है। जैसे यूरोप तथा अमेरिका में -नेटिव अमेरिकन लिटरेचर, कलर्ड लिटरेचर, स्लेव लिटरेचर तथा अफ्रिकन -अमेरिकन लिटरेचर, अफ्रीकन देशों में ब्लैक लिटरेचर, अंग्रेजी में फर्स्ट पीपुल लिटरेचर एवं ट्राइबल लिटरेचर कहा जाता है। भारतीय भाषाओ में इस के लिए एकमेव आदिवासी साहित्य शब्द का प्रयोग किया जाता है। २१ वी सदी के विमर्शों में आदिवासी विमर्श केंद्र बना।

आदिवासी साहित्य का स्वरुप व्यापक है। इस साहित्य में विद्रोह है, वेदना है, अभिव्यक्ति है। आदिवासी साहित्य मूलतः सृजनात्मक साहित्य है। यह इन्सान के दर्शन को अभिव्यक्त करने वाला साहित्य है। प्रकृति और सृष्टि में जो कुछ है उसे सुन्दर माननेवाला है। आदिवासी साहित्य वर्तमान सत्ता के खिलाफ लढने वालों की सत्ता स्थापित नहीं करना चाहता। इस साहित्य का प्रेरणा स्त्रोत उसकी संस्कृति तथा बोली है। आदिवासियों की विभिन्न बोली भाषाओँ में अभिव्यक्त लोकसाहित्य और लिखित साहित्य ही सही अर्थ में आदिवासी साहित्य कहलाता है। आदिवासी समाज -मै॰ में नहीं, -हम॰ में विश्वास करता है। उसकी अभिव्यक्ति प्रतीकों के माध्यम से होती है। आदिवासी साहित्य सामूहिकता की बात करता है, उसी तरह -हम॰ की चिंता भी। आदिवासी लेखकों ने इसीलिए कविता को मुख्य साधन बनाया है। आदिवासी समाज में सृष्टि ही सर्वोच्च नियामक है। उसके दर्शन में सत्य - असत्य, सुन्दर - असुंदर, अच्छा - बुरा, दलित - ब्रम्हां, मानव - अमानव, छोटे - बड़े आदि की कोई अवधारणा नहीं।

आदिवासी साहित्य केवल शब्दों में लिखित कल्पना, अनुभव, भाव - विचार तथा यथार्थ की कलात्मक स्वानुभूति का अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह मानवीयता सहित समस्त जीव - जगत, प्रकृति का जिवंत दस्तावेज है । इस साहित्य में आध्यात्मिक अनुष्ठानों, दैनिक क्रिया कल्याणों और विविध कलात्मक अभिरुचियों एवं अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों के माध्यम से आदि प्रदर्शित दिखाई देता है। डॉ. नाजिश बेग़म कहती है की, "आदिवासी साहित्य में आत्म सजग अभिव्यक्तियों का एक ऐसा प्रखर स्वर सम्मिलित है, जो दीर्घ समय से शोषित, उत्पीडित और वंचित आदिवासी समाज की चेतना को दिन ब दिन तीव्र और प्रखर बना रहा है। लेखकों ने कविता, कहानी, उपन्यास और नाटकों में आदिवासी जन जीवन के यथार्थ चित्र प्रस्तुत किए है।"

आदिवासी साहित्य एक आयामी नहीं, बहु आयामी है, जिसमे हमें विविध कलात्मक अभिरुचियों और प्रदर्शनों का सामूहिक सह जीवन का प्रस्तुतीकरण दिखाई देता है। यह एक जिवंत परंपरा है क्योकि इसका आधार वाचिकता है, जो शब्दों के नए प्रयोग और अनुभव से सदैव नवीनतम बना रहता है। यह साहित्य जीवनवादी साहित्य है जो आदिवासियों के मूलभूत अधिकारों से बेदखल

करनेवाली सभ्यता के प्रति विद्रोह और अस्तित्व कों बचने के उपक्रम के रूप में सामने आती है। आदिवासी लोक में साहित्य के साथ विविध कला माध्यमों का विकास तथाकथित पहले हो चूका था, किन्तु वहा साहित्य निर्मिती की परंपरा लिखित रूप में न होते हुए मौखिक रूप में थी। आदिवासी जीवन परंपरा तथा समाज में साहित्य जैसी कोई परंपरा नहीं है। इसीलिए श्री. वाहरु सोनवने कहते है - " लिखित ही केवल साहित्य होता है, यह कहना ही आदिवासियों की दृष्टी से असंगत है। साहित्य और कला, साहित्य और जीवन के बीच जो दीवारे खड़ी है उन दीवारों का आदिवासी समाज में कुछ भी स्थान नहीं है। इन व्याख्याओ को बदलना जरुरी है, क्यों की आज आदिवासी समाज में कई प्रथाए, लोकगीत, नाटक तथा अन्य कलाए विद्यमान है, जिसे शब्दबद्ध नहीं किया गया, वे परंपराए आज भी मौखिक रूप में आदिवासी जीवन का अभिन्न अंग रही है।"

आदिवासी साहित्य के विशेषज्ञों का कहना है की आदिवासी भाषाओँ में रचित साहित्य और मौखिक परंपरा आदिवासी साहित्य का मूल स्रोत है। केवल हिंदी में लिखित मुद्रित आदिवासी संबंधी लेखन कों आदिवासी साहित्य कहना उचित नहीं है। आदिवासी लेखकों का कहना है की आदिवासियों का ज्यादातर लेखन उनकी अपनी भाषा में हुआ है। हिंदी भाषी प्रांतो में निवास करते हुए भी उनकी अपनी भाषाएँ है। उन्हें अपनी भाषओं में सहजता से अभिव्यक्ति मिलती है। मौखिक साहित्य इसका मूलाधार है।

आदिवासी साहित्य कों तीन भागों में विभाजित किया जाता है।

१) पुरखा साहित्य
२) आदिवासी भाषाओं में लिखित साहित्य
३) समकालीन हिंदी आदिवासी लेखन

१) **पुरखा साहित्य :-** आदिवासी साहित्य का मूलाधार पुरखा साहित्य है। पुरखा साहित्य आदिवासी समाज की हजारों वर्षों से जारी मौखिक साहित्य की परंपरा है। आदिवासी चिंतक इस मौखिक परंपरा कों मौखिक साहित्य या लोकसाहित्य कहने के अलावा पुरखा साहित्य कहते है। मौखिक साहित्य से कुछ पता नहीं चलता की किसका और कैसा मौखिक साहित्य है ? सभी समाज में लिखित से पहले मौखिक साहित्य की परंपरा रही है। उसे अलग करने के लिए आदिवासी चिंतक आदिवासी परंपरा को पुरखा साहित्य कहते है। इसलिए वे इसे लोकसाहित्य से भी अलग बताते है। वंदना टेटे कहती है - "चूँकि आदिवासी समाज में बाहरी समाज की तरह लोग और शास्त्र का भेद नहीं है। इसलिए साहित्य कों भी नहीं बाँटा जा सकता। चूँकि आदिवासी समाज और संस्कृति में पुरखों का बहुत महत्व है और मौखिक परंपरा में मिलनेवाली गीत, कथाएँ आदि भी पुरखों ने रची है, इसलिए इस मौखिक परंपरा कों सम्मिलित रूप में पुरखा

साहित्य कहना चाहिए।" पुरखा साहित्य के माध्यम से आदिवासी के जीवन दर्शन, ज्ञान परंपरा, मूल्यों आदि की जानकारी मिलती है। इसलिए आदिवासी जीवन कों जानने के लिए पुरखा साहित्य कों संकलित करना बहुत जरुरी है। देश में ३०० से अधिक आदिवासी भाषओं में पुरखा साहित्य की परंपरा दिखाई देती है। पुरखों के प्रति कृतज्ञता, प्रकृति और प्रेम के प्रति गहरी संवेदनशीलता, बाहरी समाज के हमलों के प्रति सजगता, अपनी परंपरा और संस्कृति कों बचाने का भाव आदि पुरखा साहित्य की विशेषताए है।

२) **आदिवासी भाषाओं में रचित साहित्य :-** लगभग डेढ़ सौ - तीन सौ साल पहले आदिवासी भाषाओं मे लिपियाँ विकसित होने लगी। कई आदिवासी भाषाओं ने पड़ोस की किसी बड़ी भाषा की लिपि स्विकार की। आदिवासी भाषा में लेखन और मुद्रण की परम्परा सौ साल पुरानी है। उपलब्ध स्रोत सामग्री के अनुसार ' मतुराअ कहनि ' नामक पहला आदिवासी उपन्यास है। यह वीसवी सदी के दूसरे दशक में लिखा गया। इसके एक भाग का अनुवाद हिंदी में -चलो चाय बागान ' नामक उपन्यास से किया गया है। आदिवासी साहित्य की विशेषता यह है कि इसमें विधाएँ भले ही बाहरी समाज और भाषाओ से ली गई है| लेकिन रचनाकार अपनी मातृभाषा से लिख रहा है, इसमे अभिव्यक्त विचार तथा दर्शन मे मौलिकता बनी रहती है। हिंदी तथा अन्य भाषाओं में भी इस साहित्य का अनुवाद होने लगा है। आदिवासी भाषाओं मे हर साल सैकड़ो किताबे प्रकाशित होती है।

३) **समकालीन हिंदी आदिवासी लेखन :-** समकालीन आदिवासी लेखन साहित्य विमर्श और अन्य समाज को प्रभावित करने की दृष्टिसे महत्वपूर्ण माना जाता है। इसमें आदिवासी लेखन बाहरी प्रभाव मे हिंदी आदिवासी - गैर आदिवासी भाषाओं और विधाओं में लिखा गया है। इसमें आदिवासी लेखकों ने अपनी मौलिकता, विचार तथा दर्शन बचाए रखे है।

आदिवासी कविता :- आदिवासी साहित्य में कविता की परम्परा बहुत पुरानी और सब से अधिक लोकप्रिय विधा है। यह दलित साहित्य से बहुत अलग है । दलित साहित्य में व्यक्ति तथा आत्मा पर जोर है इसलिए इसमें आत्म कथात्मक लेखन प्रमुख है। किंतु आदिवासी दर्शन में व्यक्ति या आत्मा के बजाय सामूहिकता और सामाजिकता महत्वपूर्ण है, जिसे अभिव्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम कविता माना जाता है। फादर हाफमेन, जगदीश त्रिगुणायत आदि विद्वानों द्वारा पुरखा साहित्य के जो संकलन तैयार किए गए है, उससे स्पष्ट होता है कि कविता आदिवासी साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है।

हिंदी की पहली आदिवासी कवयित्री -सुशिला सामद॰ मानी जाती है। सन् १९३० - ४० के दशक में उनके दो कविता संग्रह प्रकाशित हुए। सन् १९६६ में. दुलायचंद्र मुण्डा का 'नव पल्लव॰ नामक कविता संग्रह मिलता है। बलदेव मुण्डा का 'सपनों की दुनिया ' सन १९८६ में प्रकाशित हुआ । रामदयाल मुण्डा के वापसी, पुनर्मिलन तथा अन्य नवगीत। इन रचनाकारों ने काव्य क्षेत्र में कविता की

नींव रखी। किंतु छोटे प्रकाशनो से प्रकाशित होने के कारण ये रचनाएँ हिंदी के पाठको के बीच अपनी जगह नही बना पाई। संताली कवयित्री निर्मला पुतुल की कविताओं के माध्यम से आदिवासी कविता बाहरी पाठको को आकर्षित करती है। उनके हिंदी में तीन काव्य संग्रह प्रकाशित है - -अपने घर की तलाश', -नगाड़े की तरह बजते शब्द' और 'बेघर सपने '। उनकी अधिकांश कविताएँ अनुवादित हुई है और अनेक कविताओं का भाषा साहित्य के पाठ्यक्रम मे समावेश किया गया है । वंदना टेटे ने लगभग सभी विधाओं में अपना लेखन कार्य किया। आदिवासी साहित्य की सैद्धांतिक निर्माण की प्रक्रिया में वे सक्रिय है। उनका काव्य संग्रह -कोन जोगा॰ आदिवासी टोन और आदिवासियत है। हरिराम मीणा भी आदिवासी कविता के क्षेत्र में दो दशक से सक्रिय है। इनके कई काव्य संग्रह प्रकशित है। जैसे - हाँ चॉद मेरा है, रोया नही था, यक्ष आदि। केदारनाथ अग्रवाल पुरस्कार से सम्मानित युवाकवि अनुज लुगुन ने भी आदिवासी कविता के क्षेत्र में अपनी पहचना बनाई। मराठी आदिवासी साहित्य के वरिष्ठ कवि वाहरू सोनवने का हिंदी कविता संग्रह -पहाड हिलने लगा ' है। यह हिंदी पाठकों के बीच अधिक लोकप्रिय है। महादेव टोप्पो, डुंगडुंग, सावित्री बड़ाइक, ग्रेस कुजूर, दमयंती किस्कू, धनेश्वर माँझी आदि आदिवासी कविता के क्षेत्र में सक्रिय दिखाई देते है।

आदिवासी कहानी :- हमें पुरखा साहित्यमें कई कहानियाँ दिखाई देती है। पहली आदिवासी कहानीकार एलिस एक्का बीसवी सदी के छठे - सातवे दशक में सक्रिय थी। उनकी कहानियों को वंदना टेटे ने संकलित करके फिर से प्रकाशित किया। आठवे दशक में रामदयाल मुण्डा कविता के अलावा अपनी कहानी लेखन के क्षेत्र में भी सक्रिय थे। पीटर पॉल एक्का लम्बे समय से आदिवासी कथा लेखन के क्षेत्र में सक्रिय है। उनका कहानी संग्रह 'राजकुमारों के देश में ' तथा -परती जमीन॰ आदिवासी साहित्य की महत्वपूर्ण रचनाओं में शामिल है। -रोज केर केट्टा का पगहा॰, -जोरी जोरी रे घाटो॰, हिंदी में बहुत चर्चित रहा। वाल्टर भेंगरा तरूण का संग्रह -जंगल की ललकार॰ १९९८ में प्रकाशित हुआ। इनके कई कहानी संग्रह है। जैसे - लोटती रेखाएँ, देने का सुख आदि महत्वपूर्ण कृतियाँ है। वंदना टेटे का 'जंगल॰ नामक आदिवासी कहानी संग्रह संपादित हुआ है। इसमें आदिवासी जीवन दर्शन चित्रित किया गया है। मंगलसिंह मुण्डा, रूपलाल बेदिया, तिर्की शंकरलाल मीणा आदि कहानीकारों का समावेश दिखाई देता है।

आदिवासी उपन्यास :- आदिवासी उपन्यास के क्षेत्र में पीटर पॉल एक्का का -पलाश के फूल', -मौन घाटी ', -सोन पहाडी॰ आदि उपन्यासों की रचना की गई। वाल्टर भेंगरा के -जंगल के गीत॰,॰ लौटते हुए॰, -शाम की सुबह॰, -तलाश॰ आदि उपन्यासों की रचना की। हरिराम मीणा का -धूनी तपे तीर ' में आदिवासी जीवन दर्शन कम दिखाई देता है, किंतु हिंदी में बहुत लोकप्रिय है। मंगलसिंह मुण्डा का -छैला संदु॰ और अजय कंडूलना का -बड़े सपनों की उड़ान' बहुत चर्चित है।

अन्य विधा :- आदिवासी साहित्य में कहानी, उपन्यास और कविता के अलावा अन्य विधाओं को भी लोकप्रियता मिली है। आदिवासी आंदोलनो पर ग्लैडसन डुंगडुंग और सुनिल मिंज की कई किताबे जैसे - नगडी का नगाडा, झारखंड में अस्मिता संघर्ष आदि। हरिराम मीणा ने -जंगल जंगल जलियॉवाला॰ और -साइबर सिटी से नंगे आदिवासी तक॰ शीर्षक से आदिवासी जीवन से संबंधित यात्रा, संस्मरण की रचना कि गई। वंदना टेटे की पुरखा लड़ाके, आदिवासी साहित्य परंपरा और प्रयोजन, वाचिकता, आदिवासी दर्शन और साहित्य, पुरखा झारखण्डी साहित्यकार और नए साक्षात्कार आदि किताबें आदिवासी दर्शन और साहित्य का अध्ययन करने में महत्वपूर्ण है।

आदिवासी साहित्य की विभिन्न विधाओं के अलावा आदिवासी विचारधारा तथा दार्शनिकता अधिक महत्वपूर्ण है। जिस तरह डॉ. भीमराव आंबेडकर का दर्शन दलित साहित्य का मूल है,उसी तरह आदिवासी साहित्य के विचार पुरुष जयपाल सिंह मुण्डा है। मूलतः झारखण्ड के रहनेवाले जयपाल सिंह ने ऑक्सफोर्ड से पढ़ाई की। ओलम्पिक में पहला स्वर्ण पदक जीतने वाले हॉकी टिम के कप्तान रहे। इन्होंने 'आदिवासी॰ शीर्षक नामक पत्रिका प्रकाशित की। भारत के संविधान निर्मिती सभा के सदस्य तथा आदिवासी प्रतिनिधी भी रहे।

आदिवासी साहित्य की विशेषता :-

- आदिवासी साहित्य व्यक्तिवादी का नकार और सामुहिकता का समर्थन करता है।
- आदिवासी साहित्य में मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ माना गया। इसमें सभी प्राणी तथा प्रकृति को बचाना जरूरी है।
- आदिवासी साहित्य पूँजीवादी तथा अर्थतंत्र का विरोध करता है।
- आदिवासी साहित्य प्रकृति को संसाधन नही पूर्वज मानता है ।
- इसमें आक्रोश को नही सहजीवन पर जोर दिया गया है ।
- यह साहित्य स्वायत्तता और स्वशासन के सवाल उठाता है ।
- आदिवासी साहित्य की परंपरा संस्कृतिकरण और आदिवासी समाज पर इसके कुप्रभावों के प्रति सचेत है।
- आदिवासी साहित्य भाषाओं और संस्कृतियों को बचाने के लिए वचनबद्ध है।
- सभी कलाएँ एक दूसरे से जुडी है। कलाओं में साहित्य और कला विशेष महत्वपूर्ण नही है।
- आदिवासी यों के उत्थान के लिए आर्थिक के साथ सांस्कृतिक सवाल भी आवश्यक है।
- आदिवासी साहित्य आदिवासी आंदोलनो की परम्परा और राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलनो मे आदिवासीयों से जुड़ी कहानियों को सामने लाता है।
- आदिवासी साहित्य वर्तमान में आदिवासियों के समक्ष उपस्थित समस्याओं से परिचित कराता है। जैसे - विस्थापन की समस्या, आर्थिक शोषण, आदिवासी स्त्री समस्या आदि।
- आदिवासी साहित्य हिंदू मिथको के डिकोडीकरण का कार्य कर रहा है।

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि आदिवासी समाज और साहित्य को विकसित करने के लिए आदिवासी साहित्य की परम्परा का अध्ययन करना जरूरी है। सही संदर्भ में उसे समझना जरूरी है यह साहित्य प्रकृति को बचाने का एक सशक्त माध्यम है इसमें कोई संदेह नही इसलिए हम कह सकते है कि - " जंगल है तो आदिवासी है, नदी है तो आदिवासी है, प्रकृति का संवर्धक तथा सच्चा दोस्त आदिवासी ही है।

*****

डॉ.नीलम एन. मातकर
(CHB - हिंदी विभाग)
शासकीय विदर्भ ज्ञान विज्ञान संस्था,
अमरावती, महाराष्ट्र
मो.नं. - ९४२२९५५३८२